

क्या आप जानते हैं- - -

जीवन क्या है ?

– बी० के० शिवकुमार (ज्ञानसरोवर)

जीवन सभी जी रहे हैं बिना सोचे समझे। हर दिन सुबह आती है शाम हो जाती है इस तरह बरसों गुजर जाती हैं, जीवन ढलती जाती है हर क्षण, हर पल, हर व्यक्ति नया- नया विचार बनाता है कुछ कर नहीं पाता है यूं ही जीवन गंवाता है, कभी प्रेम, कभी द्वेष, कभी लोभ, कभी क्रोध, कभी दया, कभी कृपा बस कभी उतार, कभी चढ़ाव की कश्मकश में पूरी हो जाती है जिन्दगी।

जो मनुष्य स्वयं के जीवन को जितना महत्व देता है वह उतना ही महत्वशाली बन जाता है। यह सिद्धान्त सम्पूर्ण सत्य है मानव जीवन ईश्वर की श्रेष्ठ रचना है। उसने मनुष्य की रचना देव स्वरूप में किया था, उसे प्रकृति का सम्पूर्ण सौन्दर्य प्रदान किया था और उसके जीने के लिए कुछ सिद्धान्त भी बनाये थे परन्तु जब अटल सिद्धान्तों का अतिक्रमण कर यह सुन्दर रचना देवत्व से मानवता की ओर और फिर मानवता से दानवता की ओर चली, आज मानव वास्तव में मानव नहीं है। वसुन्धरा माँ के आँचल की शोभा थे, मानव मानवता को भूल चुका है मानव मूल्य उसे पुरानापन लगता है। आधुनिकता का रंग उससे मानवता का रंग उतार चुका है और वह यह नहीं जानता कि दानव उसका ही स्वरूप है।

जीवन क्या है ? विद्वानों ने इसकी विभिन्न व्याख्यायें की हैं परन्तु शब्दों की सीमाओं में जीवन को बाँधना सरल काम नहीं है। हम जानते हैं कि हम इस देह में विराजमान एक चेतन सत्ता आत्मा है मनुष्य आत्मा और शरीर के मिलन को मनुष्य कहा जाता है और आत्मा के शरीर द्वारा अपने गुणों व

शक्तियों की अभिव्यक्ति करने की लम्बे पार्ट को जीवन कहेंगे। जीवन एक लम्बी यात्रा है।

आत्मा रूपी ड्राइवर शरीर रूपी गाडी में बैठकर यह लम्बी यात्रा तय करता है जब गाडी जर्जर हो जाती है, जब गाडी की शक्ति क्षीण हो जाती है तो यह आत्मा चालक उसका परित्याग कर अन्यत्र चला जाता है इसे ही मृत्यु कहते हैं। यह जन्म और मृत्यु दोनों ही इस विराट विश्व नाटक की अनुपम घटनायें हैं प्रथम दोनों का मिलन है दूसरा दोनों की बिछुड़न है आत्मा ने शरीर में कैसी- कैसी अभिव्यक्तियाँ की वही उसकी कर्म कहानी बन जाती है।

यह जीवन आत्मा का प्रकृति के साथ आनन्द विभोर होने का काल है आत्मा और प्रकृति का मिलन होता इसलिए है कि आत्मा प्रकृति के संसर्ग में रहकर उसका उपभोग कर सके, परन्तु धीर- धीरे आत्मा प्रकृति के अपभोग में इतनी मग्न हो जाती है कि वह प्रकृति को ही सब कुछ समझकर उसके अधिन हो जाती है। यहीं से जीवन में विभिन्न कुव्यसनों, कुविचारों, की प्रवेशता होती है। और जीवन लीला पतन की राह पकड़ लेती है। जिसने जीवन का राज समझ लिया वह बोलता नहीं मौन हो जाता है। और मौन होकर भी गौण हो जाता है। अर्थात् अपने अस्तित्व को भूल जाता है, अहंकार को समाप्त कर देता है, नम्रता भाव धारण कर लेता है, और एक दूसरे को सम्मान देता है जिससे सर्व आत्माओं के प्रति दया, प्रेम, शुभ- भावना, शुभ-कामनायें उत्पन्न होती हैं, मैत्री भाव जागती है, इन सबका मूल स्रोत राजयोग है। राजयोग जीवन को सार्थक बनाती है और राजयोग ही सच्चा जीवन जीने की कला सिखाती है, यही जीवन का सार है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com